जनवरी - फरवरी 2020

अंक 288 वर्ष 59

भाषा

जनवरी–फरवरी 2020

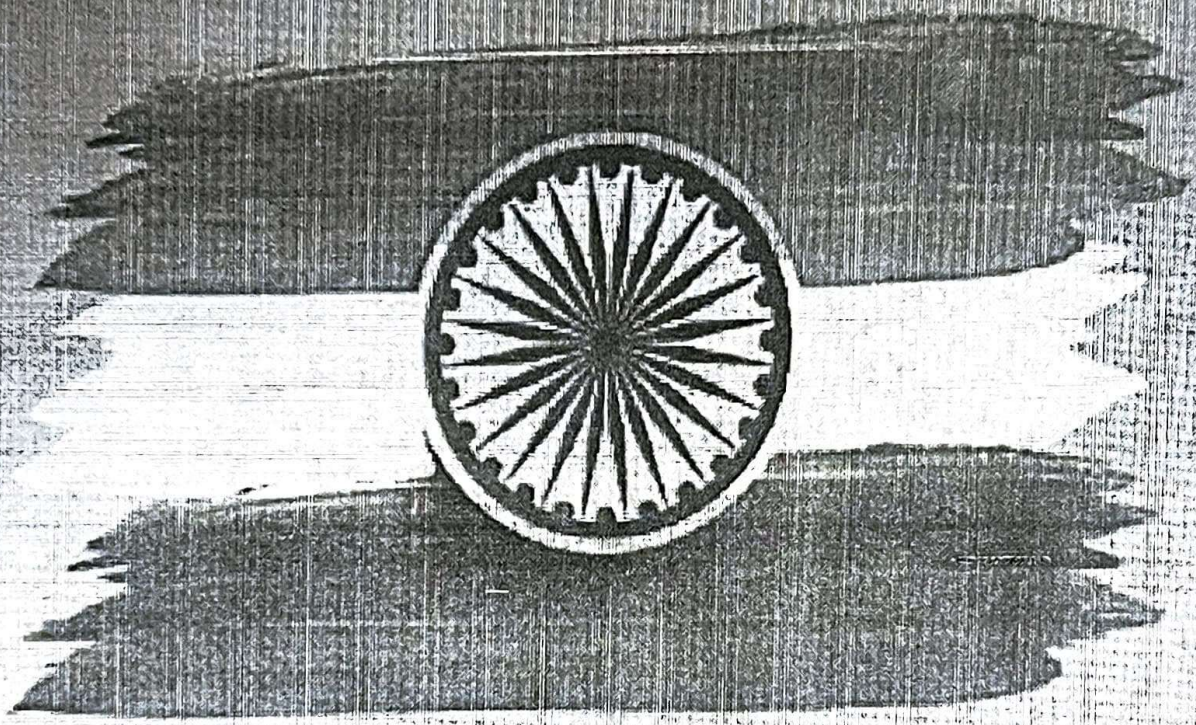

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

Skill India

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
संपादकीय
श्रद्धांजलि – डॉ. गंगाप्रसाद विमल

आलेख

1. स्त्रीवाद का भारतीय परिप्रेक्ष्य और 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री'	दिलीप कुमार	21
2. मरुभूमि की कोयल : मीराबाई	डॉ. एम. शेषन्	27
3. मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना : उत्तराधुनिकता के संदर्भ में	डॉ. जस्टी एम्मानुएल	31
4. गुरु नानकदेव की काव्य-भाषा	डॉ. लालचंद गुप्त 'मंगल'	36
5. कालिदास एवं विद्यापति का प्रकृति-चित्रण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. संगीता कुमारी	41
6. बलुतं : भारतीय दलित साहित्य की प्रथम आत्मकथा	डॉ. गोरख काकडे डॉ. ललिता राठोड	46
7. मुस्लिम लेखकों की हिंदी कहानियों में चित्रित पारिवारिक संदर्भ	डॉ. पठान रहीम खान	50
8. नाटक एकांकी का शैक्षिक महत्व	डॉ. हीरालाल बाछोतिया	55
9. मिशनरी 'श्री गुरु नानकदेव' और उनका मिशन 'मानव चेतना'	डॉ. सुनीता शर्मा	58
10. मगही भाषासाहित्य : एक परिचय	प्रो. उमाशंकर सिंह	66
11. भारतीय भाषाओं में राजनीतिविज्ञान के तकनीकी व पारिभाषिक शब्दावलियों का अनुवाद और देशज ज्ञान के विकास की महत्ता	डॉ. नावेद जमाल डॉ. संजियो कुमार सिंह	72
12. एक कोखजायी हिंदी-उर्दू का मिलन करता चैट उपन्यास 'नॉट इक्वल टू लव'	डॉ. सुधा त्रिवेदी	78

यात्रा वृतांत

13. अध्यात्म और रोमांच से पूर्ण कैलाश मानसरोवर यात्रा	गांधारी पांगती	85
14. मुसाफिर पहुँचा पूछ तक	डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश'	95

हिंदी कहानी

15. सत्यमेव जयते	विष्णु भट्ट	99
16. अनोखी श्रद्धांजलि	जहीर कुरैशी	103

बलुतं : भारतीय दलित साहित्य की प्रथम आत्मकथा

डॉ. गोरख काकडे
डॉ. ललिता राठोड

'बलुतं' दया पवार की आत्मकथा है। यह मराठी में सन् 1978 में प्रकाशित हुई जो मराठी की प्रथम दलित आत्मकथा है। साथ ही यह भारतीय दलित साहित्य की भी प्रथम आत्मकथा है जो अनेक भाषाओं में अनूदित हुई है। हिंदी में इसका अनुवाद सन् 1980 में 'अछूत' नाम से हुआ है। हिंदी में भी अनूदित होने वाली यह पहली मराठी दलित आत्मकथा है, जिसे शमोदर खड़से ने अनूदित किया है। 'बलुतं' में व्यक्तिगत दुखों के साथ-साथ सामाजिक दुखों को अभिव्यक्त किया गया है। दया पवार आत्मकथा के प्रथम पन्ने पर ही लिखते हैं "भारतीय समाज व्यवस्था का लादा हुआ, यह दुख का बलुतं।" साथ ही अपने समाज की अहमियत क्या है इस विषय में जैक लंडन का कथन देते हैं, "यह पत्थर घर निर्माण से निकाला हुआ।" घर का तात्पर्य यहाँ समाज से है। इस समाज में दगडू मारुती पवार का परिवार अपना कोई स्थान नहीं रखता। हमेशा गए-गुजरे काम करके ही अपना पेट पालता रहा है। पेट क्या पालता है, सिर्फ जीवित रहने के लिए मरे हुए जानवरों का मांस खाता है, हमेशा सफेदपोश समाज से घृणा पाता है। मरे हुए जानवरों को कंधा देना, गाँव में ढिंढोरा पीटना, धूप-बारिश हो या सर्दी एक जगह से दूसरी जगह संपत्ति, संदेश पहुँचाना आदि काम करने पड़ते हैं।

लेखक दया पवार का जन्म महाराष्ट्र की एक अस्पृश्य, अछूत मानी जाने वाली महार जाति में हुआ। भारतीय समाज व्यवस्था में इस जाति का स्थान शूद्र वर्ण में सबसे नीचे के पायदान पर है। इस समाज के साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर भी नीचता का व्यवहार किया जाता रहा है। उन्हें किसी भी मंदिर में प्रवेश नहीं, प्रवेश तो छोड़िए उनकी परछाई भी हिंदुओं के देवताओं और मनुष्यों को अपवित्र कर देती है। इनके लिए पानी का कुआँ अलग, पनघट अलग, इनके नसीब में केवल बासी, बचा हुआ खाना और बदले में बहुत सारा काम। ऊपर से बिच्छू जैसे डंक वाले शब्दों का उपहार। यह है दया पवार का 'बलुतं' में चित्रित समाज।

आत्मकथा में छुआछूत की जो समस्या चित्रित की गई है वह सिर्फ सवर्ण एवं दलितों के बीच ही नहीं, जो दलित समझे जाते हैं वो भी एक-दूसरे को अस्पृश्य समझते हैं। मोची समाज महार समाज से घृणा करता है। महार एवं मातंग भी एक दूसरे को छूते नहीं। लेखक ने इन सामाजिक दुर्गुणों का चित्रण करते हुए अपने समाज में व्याप्त अनैतिक यौन संबंध, शराब की लत, अस्वच्छता, अंधविश्वास, रुढ़ि-प्रथाओं का चित्रण भी किया है।

आत्मकथा में लेखक के व्यक्तिगत दुखों के तीन पड़ाव हैं- दगडू का बाल्यकाल, छात्र जीवन एवं उसकी युवावस्था का व्यक्तिगत जीवन। लेखक को अपने जन्म से लेकर स्थायी होने तक जिन दुखों का सामना करना पड़ा उनको मुखर किया गया है। पिता का आकस्मिक निधन, मुंबई से गाँव की ओर आना, माँ की कमाई पर शिक्षा, मुंबई का आगे बढ़ना, पत्नी का संसार से निकलना आदि। आत्मकथा में लेखक ने बड़ी आत्मीयता से माँ के स्वाभिमानी जीवन का चित्रण किया है। पिता के मरने के बाद जी तोड़ मेहनत करने वाली, दूसरे विवाह का विरोध करने वाली स्वाभिमानी माँ का चित्रण करते वक्त वे कहते हैं, "माँ तुम्हारे कारण ही लाखों दलितों के विराट दुख का दर्शन हुआ।" यह आत्मकथा

ISSN 0523-1418